

गीत

राग प्रभाती

आओ कोकिल शुक हंस सारसो,
जागी श्री जानकी देवी सवेली ।
बोली मैना सुनु मातु—सुनैना,
लाओ माखन मिश्री से मेली ॥
मैथिलि अकेली दा रघुबर बेली ।
मैथिलि अकेली नवेली अलबेली,
श्रीराम सौं सतिगुर मेली ॥
मिली श्रीराधिका मन मोहन सौं,
शिव जी सौं गिरिजा शैली ।
कमला जू को वरु वैकुण्ठेश्वर,
राघव जी की, सीय सहेली ॥
राज महिषी अयोध्या नगर की
त्रिहुत की जन्मेली ।

(९०)

फूलों की डाली हाथ में सोहे,
महर्षि राम सीय चेली ॥
प्रात समय उदया चलो

भुवन दीप दरसेली ।

बैठी वैदेही बनवासिणी

इहा सुमन सरोवर केली ॥

जियें सदां सिय स्वामिनी चन्द्र वदन चमकेली ।

सतिगुर वेदवती वायू वसन्त लागे,

सदिके गरीबि श्रीखण्डि नवेली ॥

____***____